IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 7, Issue 1, July 2019
Impact Factor: 4.819

ekgunkl ufe'kjk; dk jpuk deZ vkSj nfyr vfLerk

Mk0 jes'k ;kno
असि0 प्रोफेसर . हिंदी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कैराना शामली

मोहनदास नैमिशराय का मानना है कि राजनैतिक आजादी की बात को एक तरफ रख दे तो असमानता और भेदभाव से भरे इस समाज –इस देश को दलित शायद अपना नहीं कह सकता है । देश एक भौगोलिक इकाई से अधिक मन द्वारा स्वीकारा गया प्रत्यय है , मूल्य है। देश का मूल्य स्वतंत्रता , समानता और बंधुत्व से बनता है। अगर नागरिको को यह मूल्य हासिल नहीं तो उनके लिए तो देश भूगोल के नक्शे की आकृति है और देशभक्ति एक खोखला तमाशा । देश प्रेम का यह तमाशा जितना बढता जाता है देश का अहसास उतना ही लोगों के दिलों में मरता चला जाता है। नैमिशराय जी अपने उपन्यास के माध्यम से देश ,समाज और मुक्ति के बारे में प्रचलित मान्यताओं पर सवाल खडा करते है। दलित समाज की मुक्ति का रास्ता इस देश के सवर्ण मध्यवर्ग की दिशा से अलग है। मुक्तिपर्व में शहर और दलित बस्ती के बीच का फासला इस अलगाव की पुष्टि करता है।

मुक्ति की अवधारणा भारतीय चिंतन परम्परा में लगभग बीज शब्द की तरह उपस्थित है। वेद – ब्रहा को गाने वाले मीमांसा हां , वेदांत हो अथवा वेद विरोधी जैन, बौद्व हो , सभी मुक्ति की सत्ता में अगाध विश्वास रखतें है। प्राचीन काल में मुक्ति का अर्थ इसके वर्तमान रूप से भिन्न हैं। प्राचीन काल में मुक्ति का आशय जरा मरण के बंधन से मुक्ति था। किसी संप्रदाय के लिए ज्ञान मुक्ति का मार्ग था तो किसी के लिए भक्ति तो किसी के लिए वैदिक कर्मकाण्ड । मुक्ति चिन्तन का समूचा प्राचीन उद्यम इस लोक नहीं परलोक के लिये था ,जीवन कम मृत्यु की चिंता से अधिक उभरता था । जैन और बौद्व धर्म तो ईश्वर की सत्ता में विश्वास ही नहीं करते थे । लेकिन मुक्ति के लिए दोनों ही धर्मो में बकायदा विधि विधान उपस्थित

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT